माघे मेघे गतं वयः :→

'माघे मेघे गतं वयः' अर्थात 'माघ' और 'मेघ' को लेकर ही सारी उम्र गुजार दी। यहाँ 'माघे' का अर्थ है कवि माघ और 'मेघ' का अर्थ है 'मेघदूत'। संस्कृतज्ञों में एक उक्ति चलती है - काव्येषु माघ कवि है कवि कालिदास। महाकाव्य हो तो माघ का, अन्य कविता कालिदास की। और संभवतः इसी उक्ति के समानांतर मल्लिनाथ की उक्ति चल पड़ी।

महाकाव्य 'शिशुपालवध' को माघ काव्य के नाम से भी जाना जाता है। माघ की एकमात्र कृति शिशुपालवध ही है जिसे उनके नाम से भी संबोधित किया जाता है। उपर्युक्त उक्ति जो प्रचलित कि मेघ और माघ को पढ़ने में ही पूरा जीवन व्यतीत हुआ। इससे इस बात का पता चलता है कि माघ का महाकाव्य और कालिदास का मेघदूत दोनों ही रचनाएं अपने आप में अद्वितीय है। माघ कवि को विविध शास्त्रों का ज्ञान था। इस बात का ज्ञान हमें शिशुपालवध महाकाव्य के अध्ययन से होता है। माघ का काव्य कई नवीन वैचारिक अवधारणाएँ उद्घाटित करता है। क्योंकि माघ की काव्य कला अपने आप में अनूठी है। माघ काव्य को हम जितनी बार पढ़ेंगे उतनी ही बार हमें नवीन तथ्यों का बोध होगा। अतः माघ काव्य महाकाव्य के सभी लक्षणों से परिपूर्ण काव्य है।

Scanned with CamScanner

शिशुपालवध महाकाव्य में २० सर्ग है तथा इसमें लगभग 1650 श्लोक हैं। यह महाकाव्य वृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित किया जाता है। इस महाकाव्य का उपजीव्य महाभारत का सभा पर्व है। अङ्गी रस वीर है। बाकि रसों का भी खूब प्रयोग इस महाकाव्य में अङ्ग रूप में हुआ है।

Scanned with CamScanner